हुण्डिका=मुद्रा। भौवादिक**कुण्ठति**वत् (209) रूपाण्यूह्यानि।
'भ्वादावेव **द्रमिडाः** 'हुडि सङ्घाते' इति पठन्ति, **आर्यास्तु** न पठन्ति;' इति **काश्यप**मतप्रदर्शनपूर्वकं **माधवीये** प्रतिपादितम्।

(2011) "**हुडृ गतौ**" (I-भ्वादिः-352. सक. सेट्. पर.)

'**होडतीति गतौ** होडेर्होडतेऽनादरे पुनः।' (श्लो. 86) इति **देवः**।
भौवादिक**तोडति**वत् (738) सर्वाण्यपि रूपाण्यूह्यानि।

(2012) "**हुर्छा कौटिल्ये**" (I-भ्वादिः-211. सक. सेट्. पर.)
'**कौटिल्यम्**=अपसारणम्' इति **मैत्रेयः**। हूर्छा, [1]हूः-हुरौ-हुरः, [2]हूर्णः-हूर्णवान्, हूर्णमनेन-हूर्छितमनेन, इति विशेषः। सामान्यरूपाणि **कूजति**वत् (239) बोध्यानि।

(2013) "**हुल गतौ**" (I-भ्वादिः-844. सक. सेट्. पर.)

ज्वलादिः।

'हिंसासंवरणयोश्च' इति **मैत्रेयः**। होलः। ज्वलित्यादित्वात् (3-1-140) कर्तरि णप्रत्ययः। गौरादिपाठात्, संज्ञायां घञन्तात् स्त्रियां ङीषि-**होली**=औत्तर-क्रीडाविशेषः। भौवादिक**कोलति**वत् (231) इतररूपाण्यूह्यानि।

(2014) "**हूडृ गतौ**" (I-भ्वादिः-353. सक. सेट्. पर.)
भौवादिक**तोडति**वत् (738) सर्वाणि रूपाण्यूह्यानि।

(2015) "**हृ प्रसह्यहरणे**"

(III-जुहोत्यादिः-1097. सक. अनि. पर.)

'**प्रसह्यहृत्यां हरणे जिहर्ति** हरते हरेत्॥' (श्लो. 27) इति **देवः**।
अयं छान्दसः इति 'अर्तिपिपर्त्योश्च' (7-4-77) इत्यत्र **भाष्ये** स्पष्टम्। 'अयं स्रुवो **अभिजिहर्ति** होमान्' (आपस्तम्बश्रौतसूत्रे 4-7-2)। **कातन्त्रीयास्तु** भाषायामपि धातुममुं पठन्ति। सर्वाण्यपि रूपाणि जौहोत्यादिक**गरति** (420) वत् बोध्यानि।

---

1. क्विपि 'राल्लोपः' (6-4-21) इति छकारस्य लोपः। 'र्वोरुपधायाः—' (8-2-70) इति दीर्घः। सर्वत्र प्रयोगे पदान्तत्वनिबन्धनः, उपधादीर्घोऽस्य द्रष्टव्यः।
2. निष्ठायाम्, 'आदितश्च' (7-2-16) इतीण्निषेधे, राल्लोपे, 'रदाभ्यां—' (8-2-42) इति निष्ठानत्वम्। णत्वम्। भावे, आदिकर्मणि च धातोरिण्निषेधविकल्पः।